हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में लेखांकन उपचार/लेखांकन प्रक्रिया

(Accounting Procedure in the book of Transferee Company)

लेखांकन प्रमाप-14 (AS-14) के अनुसार हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में एकीकरण की प्रकृति के अनुसार लेखांकन करने की निम्नलिखित दो विधियाँ हैं—

1. विलय की प्रकृति के एकीकरण हेतु हितों की समूहीकरण विधि,
2. क्रय की प्रकृति के एकीकरण हेतु क्रय विधि।

दोनों विधियों की विवेचना निम्नलिखित है—

1. हितों की समूहीकरण विधि (Pooling of Interest Method)—हितों की समूहीकरण विधि एकीकरण के सम्बन्ध में लेखांकन करने की एक ऐसी विधि है जिसके अन्तर्गत एकीकरण के सम्बन्ध में उस समय लेखांकन किया जाता है जब हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के व्यवसाय को निरन्तर जारी रखा जाता है। इस विधि के अन्तर्गत एकीकृत हुई कम्पनियों के वित्तीय विवरण बनाते समय मामूली परिवर्तन किये जाते हैं। इस विधि की प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं—

(i) इस विधि का प्रयोग केवल उस समय किया जाता है जब कम्पनियों के बीच विलय के स्वभाव का एकीकरण हुआ हो।

(ii) इस विधि के अनुसार हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी की समस्त सम्पत्तियों, दायित्वों एवं संचितियों को उनके पुस्तकीय मूल्य (Existing Value) पर लिया जाता है और इसी मूल्य पर लेखा पुस्तकों में भी उल्लेख किया जाता है। एकीकरण के समय यदि दोनों कम्पनियों की लेखा नीतियों में भिन्नता हो तो एकरूपता लाने के लिए आवश्यक समायोजन किया जा सकता है। परन्तु ऐसी दशा में यदि दोनों कम्पनियों की लेखा नीतियों में भिन्नता का प्रभाव महत्वपूर्ण हो तो भिन्नता वाले लेखा वर्ष के वित्तीय विवरणों में इसका प्रभाव **लेखांकन प्रमाप**-5 (AS-5) के अनुरूप स्पष्ट रूप से प्रदर्शित करना होगा।

(iii) इस विधि में हस्तान्तरक कम्पनी के विभिन्न संचयों की स्वतन्त्र पहचान सुरक्षित रखी जाती है अर्थात् हस्तान्तरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में हस्तान्तरक कम्पनी की संचितियों को उसी रूप में प्रदर्शित किया जाता है जिस रूप में वे हस्तान्तरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रदर्शित होती हैं। उदाहरण के लिए, हस्तान्तरक कम्पनी के सामान्य संचय, पूँजी संचय एवं पुनर्मूल्यांकन संचय, आदि हस्तान्तरी कम्पनी के हो जाते हैं और उन्हें हस्तान्तरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में उसी रूप में प्रदर्शित किया जाता है जिस रूप में वे हस्तान्तरक कम्पनी के वित्तीय विवरणों में होते हैं।

(iv) इस विधि में एकीकरण के पूर्व अंशधारियों को लाभांश वितरण हेतु उपलब्ध संचितियाँ एकीकरण के पश्चात् भी लाभांश वितरण हेतु उपलब्ध रहती हैं।

Scanned with CamScanner

(v) हस्तान्तरक कम्पनी के लाभ-हानि खाते के क्रेडिट शेष को हस्तान्तरी कम्पनी के लाभ-हानि खाते के शेष में जोड़ दिया जाता है अथवा सामान्य संचय मे हस्तान्तरित कर दिया जाता है। इसी तरह हस्तान्तरक कम्पनी के लाभ-हानि खाते के डेबिट शेष को हस्तान्तरी कम्पनी निम्न प्रकार समायोजित कर सकती है:

(a) व्यवसाय क्रय करने पर हुए लाभ से, (b) विक्रेता कम्पनी के संचयो से, (c) हानि की असमायोजित राशि को नये चिट्ठे के सम्पत्ति पक्ष में दिखाया जाता है।

(vi) हस्तान्तरी (क्रेता) कम्पनी द्वारा क्रय प्रतिफल की राशि तथा हस्तान्तरक (विक्रेता) कम्पनी की अंश पूँजी (समता एवं पूर्वाधिकार) की राशि का अन्तर (यदि लाभ है) हस्तान्तरक कम्पनी के सामान्य संचय या लाभ-हानि खाते की राशि में जोड़कर अथवा पृथक् से क्रेता कम्पनी के नये चिट्ठे में दायित्व पक्ष में दर्शाया जाता है। इसके विपरीत यदि ऊपर वर्णित अन्तर की राशि हानि है तो उसे विक्रेता के संचयों तथा लाभ-हानि खाते की राशि में से घटा दिया जाता है और शेष बची राशि को नई कम्पनी के चिट्ठे में दिखाया जाता है।

(vii) क्रेता कम्पनी विक्रेता कम्पनी की सम्पत्तियों, तथा दायित्वों को अपनी सम्पत्ति एवं दायित्व में जोड़कर, पूँजीगत संचय को अपने पूँजीगत संचय में जोड़कर तथा आयगत संचय को अपने आयगत संचय में जोड़कर नये चिट्ठे में दर्शाती है।

(viii)हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा हस्तान्तरक कम्पनी के वहन किये गये समापन अथवा वसूली के व्ययों को हस्तान्तरी कम्पनी अपने लाभ-हानि खाते के शेष से अथवा सामान्य संचय से अपलिखित करती है।

2. क्रय विधि (Purchase Method)—यह विधि उस समय अपनाई जाती है जब एकीकरण क्रय की प्रकृति का हो। इस विधि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

(i) इस विधि में हस्तान्तरक कम्पनी की समस्त सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके पुस्तकीय मूल्य (Existing Value) पर हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में शामिल किया जाता है अथवा एकीकरण की तिथि पर हस्तान्तरक कम्पनी की पहचानी जा सकने वाली सम्पत्तियों एवं दायित्वों को उनके उचित मूल्य (Fair Value) पर हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में शामिल किया जा सकता है।

(ii) हस्तान्तरक (विक्रेता) कम्पनी के वैधानिक संचयों को छोड़कर अन्य संचय जैसे सामान्य संचय, पूँजी संचय, पुनर्मूल्यांकन संचय आदि को हस्तान्तरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में सम्मिलित नहीं किया जाता है।

(iii) इस विधि में हस्तान्तरक कम्पनी की वैधानिक संचितियाँ; जैसे, विकास भत्ता सचय (Development Allowance Reserve), विनियोग भत्ता संचय (Investment Allowance Reserve), आदि को सुरक्षित रखना तथा हस्तान्तरी कम्पनी के वित्तीय विवरणों में प्रदर्शित करना आवश्यक है। इसके लिए 'एकीकरण समायोजन खाता (Amalgamation Adjustment Account) डेबिट किया जाता है तथा वैधानिक संचयों के खाते क्रेडिट किये जाते हैं और इसे चिट्ठे में 'विविध व्यय' (Miscellaneous Expenditure) शीर्षक के अन्तर्गत प्रदर्शित किया जाता है और जब इन संचयों एवं लेखे को रखने की आवश्यकता न हो तब इसे बन्द कर देना चाहिये।

(iv) इस विधि में हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा ली गई हस्तान्तरक कम्पनी की शुद्ध सम्पत्तियों के मूल्य में से क्रय प्रतिफल को घटाया जाता है तथा परिणाम यदि ऋणात्मक (Negative) प्राप्त होता है अर्थात् क्रय प्रतिफल, सम्पत्तियों के शुद्ध मूल्य से अधिक होता है तो इस अन्तर की राशि को एकीकरण पर उत्पन्न 'ख्याति' कहा जाता है और इसे

Scanned with CamScanner

हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा 'ख्याति खाते' (Goodwill Account) में डेबिट कर दिया जाएगा। इसके विपरीत यदि परिणाम धनात्मक (Positive) प्राप्त होता है अर्थात् शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य, क्रय प्रतिफल से अधिक है तो इस अन्तर की राशि को 'पूँजी संचय' (Capital Reserve) कहा जाता है और इसे 'पूँजी संचय खाता' (Capital Reserve Account) में क्रेडिट कर दिया जाता है। सूत्र रूप में—

(अ) ख्याति = क्रय प्रतिफल – शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य

(ब) पूँजी संचय = शुद्ध सम्पत्तियों का मूल्य – क्रय प्रतिफल

(v) **लेखा प्रमाप-14** के अनुसार, एकीकरण पर उत्पन्न ख्याति को अधिक से अधिक पाँच वर्षों में अपलिखित कर देना चाहिए। यदि किसी कारण से आवश्यक हो तो इस अवधि में वृद्धि की जा सकती है। फिर भी अन्ततः इसका अपलिखित किया जाना आवश्यक है।

लेखांकन विधियों की तुलना
(Comparison of Accounting Methods)

एकीकरण के सम्बन्ध में लेखांकन की दोनों विधियों की विवेचना करने के पश्चात् इन दोनों लेखांकन विधियों की तुलनात्मक स्थिति निम्नलिखित प्रकार है—

(i) हितों के समूहीकरण विधि का प्रयोग विलय के स्वभाव के एकीकरण की दशा में किया जाता है जबकि क्रय विधि का प्रयोग क्रय के स्वभाव के एकीकरण में किया जाता है।

(ii) हितों के समूहीकरण विधि में हस्तान्तरक कम्पनी की सम्पत्तियों एवं दायित्वों को हस्तान्तरी कम्पनी की लेखा पुस्तकों में 'पुस्तकीय मूल्य' पर प्रदर्शित किया जाता है जबकि क्रय विधि में 'पुस्तकीय मूल्य' पर या 'उचित मूल्य' पर प्रदर्शित किया जाता है।

(iii) हितों के समूहीकरण विधि में हस्तान्तरक कम्पनी के लाभ-हानि शेष एवं सभी संचयों का उल्लेख हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में किया जाता है जबकि क्रय विधि में केवल वैधानिक संचयों का उल्लेख किया जाता है।

(iv) हितों के समूहीकरण विधि में निर्धारित क्रय प्रतिफल (समता अंश पूँजी और रोकड़ के रूप में) और हस्तान्तरक कम्पनी की अंश पूँजी की अन्तर की राशि को सामान्य संचिति में हस्तान्तरित किया जाता है जबकि क्रय विधि में क्रय प्रतिफल (समता अंश पूँजी, रोकड़ एवं अन्य रूप में) और हस्तान्तरी कम्पनी द्वारा ली गई सम्पत्तियों के शुद्ध मूल्य के अन्तर को ख्याति अथवा पूँजी संचय खाते में हस्तान्तरित किया जाता है।

(v) हितों के समूहीकरण विधि में 'एकीकरण समायोजन खाता' खोलने की आवश्यकता नहीं होती जबकि क्रय विधि में वैधानिक संचितियों का लेखा हस्तान्तरी कम्पनी की पुस्तकों में करने के लिए 'एकीकरण समायोजन खाता' खोलने की आवश्यकता होती है।

Scanned with CamScanner